

मेरा गुप्त जीवन -93

“आगरा से लाए गिफ्ट कम्मो पारो को देकर कहा कि आज रात उनकी गान्ड माँरूँगा मैं.. दोनों ने हां कर दी. रात को कम्मो को लेकर मैं गार्डन में आया और वहां उसकी गान्ड मारने की सोचने लगा. ...”

Story By: यश देव (yashdev)

Posted: Tuesday, November 3rd, 2015

Categories: [नौकर-नौकरानी](#)

Online version: [मेरा गुप्त जीवन -93](#)

मेरा गुप्त जीवन -93

कम्मो पारो की चूत चुदाई गार्डन में

थोड़ी देर बाद मैडम मुझको और कम्मो को थैंक्स करके अपनी कार में वापस चल पड़ी। जब मैडम को छोड़ कर हम दोनों वापस आ रहे थे तो मुझको पारो मिल गई और कहने लगी- वाह छोटे मालिक, आप तो मुझको भूल ही गए ? मैंने उसको खींच कर अपनी बाँहों में भर लिया और कहा- पारो, तुमने कैसे सोच लिया कि मैं तुमको भूल गया हूँ ? शेर अपना शिकार कभी नहीं भूलता, आज मैं तुम दोनों का शिकार रात को करूँगा, तैयार रहना।

वो दोनों जाने लगी तो मुझ को याद आया कि इन दोनों के लिए पूनम कुछ उपहार खरीद कर लाई थी और वो मेरे ही सूटकेस में पड़े थे, मैं उन दोनों के चूतड़ों को हाथ से मसलता हुआ उनको अपने कमरे में ले आया और कम्मो से कहा- बेरी सॉरी, मैं भूल गया था कि पूनम तुम दोनों के लिए कुछ चीज़ें आगरा से खरीद कर लाई थी, तुम दोनों निकाल लो अपने अपने तोहफे जो पूनम ने पसंद किये थे तुम दोनों के लिए!

वो एकदम से मेरे सूटकेस पर टूट पड़ी और एक क्षण में ही उसको खाली करके अपने तोहफे निकाल लिए जिनमें कई तरह की चूड़ियाँ और भी कई चीज़ें देख कर दोनों खुशी से पागल हो गई, दोनों ही उठ कर आई और मुझको एक टाइट जप्फी मार दी।

मैंने भी दोनों को चूमा और साथ ही उनकी चूत के ऊपर हाथ से सहला दिया।

मैंने कम्मो और पारो को कहा- आज रात तुम दोनों मुझको चोदोगी और मुझको आज तुम दोनों की गांड भी लेनी है। क्यों दोगी ना ?

दोनों एक साथ बोली- छोटे मालिक, आपके लिए तो जान भी हाज़िर है यह ससुरी चूत या

गांड क्या चीज़ है ? आप हुक्म करो तो सही सब हाज़िर कर देंगी हम तो !

मैं थोड़ा थक गया था, थोड़ी देर के लिए सो गया ।

रात को पारो ने बहुत ही उम्दा खाना बनाया और हम तीनों ने एक साथ बैठ कर खाना खाया ।

दिल्ली और आगरा में खाना तो होटलों का था, उसमें घर सा आनन्द कहाँ ।

फिर मैं और कम्मो अपने गार्डन की सैर करने लगे और खिली चांदनी में हम दोनों बहुत ही रोमांटिक हो गए थे । राम सिंह चौकीदार भी मेन गेट बंद कर के सोने चला गया था और हम अति सुंदर फूलों से भरे गार्डन में प्रकृति की खुशबू का आनन्द ले रहे थे । चलते चलते हम दोनों के हाथ और दूसरे अंग एक दूसरे से टकरा रहे थे ।

मैंने अपना बायाँ हाथ कम्मो की कमर में डाल रखा था और उसको धीरे से कम्मो के नितम्बों पर फेरने लगा और फिर वहाँ से खिसकते हुए उसकी चूत पर पीछे से सहलाने लगा ।

मैंने कम्मो को सीधा किया और अपने जलते हुए होंट कम्मो के मधुर और एकदम से नरम होंटों पर रख दिए और हम दोनों एक मधुर चुम्बन करने लगे ।

मेरी चौड़ी छाती अब कम्मो के गोल गदाज़ मुम्मों को पूरी तरह से दबा कर उसके साथ चिपकी हुई थी ।

मैं कम्मो को लेकर कोई अँधेरा कोना ढूँढने लगा जहाँ ना तो चाँद की रोशनी और ना ही बिजली की चमक पहुँच सकती हो । फिर एक जगह दिखाई दी जहाँ बिल्कुल अँधेरा था और वो पेड़ पौधों से ढकी हुई थी ।

मैंने कम्मो से कहा- याद है वो जगह जहाँ हमने खुले आम चुदाई की थी ?

कम्मो बोली- वही ना जो नदी किनारे थी और जहाँ मैं आपको लेकर गई थी गाँव की औरतों को नंगी नहाते हुए देखने के लिए ?

मैं बोला- वही तो, लेकिन तुमको शायद याद नहीं, वहाँ हमने क्या किया था ?

कम्मो बोली- बिल्कुल याद है, वहाँ ही तो मैंने पहली बार खुले आम चुदाई की थी आपके संग !

मैं बोला- तो फिर उस याद को ताज़ा करने के लिए उसको दोहराते हैं हम दोनों यहाँ ।

कम्मो घबरा के बोली- खुले आम सबके सामने ? सारे लोग देख लेंगे छोटे मालिक ।

मैं बोला- अरे पगली, क्या तुझको मेरा चेहरा दिख रहा है साफ़ साफ़ ? नहीं न तो कोई कैसे देख सकता है हमको ? चल शुरू हो जा मेरी रानी, उतार साड़ी शुरू करें कहानी पुरानी ।

मैंने उसको अपनी छाती के साथ लगा कर उसकी धोती को उतारना शुरू किया और वो भी हँसते हुए मेरे इस खेल में शामिल हो गई ।

उसने खुद ही अपनी साड़ी उतार दी और ब्लाउज के बटन खोलने लगी, मैंने भी अपना कुरता और पायजामा उतार दिया ।

जब हम दोनों नंगे हो गए तो आनन्द से हमने एक दूसरे को जफ़ी डाली और हॉट चुम्मी दी एक दूसरे को !

कम्मो मेरे लंड से खेलने लगी और मैंने भी उसके मुम्मों को दबाना और चूसना शुरू किया ।

मैं उसकी चूत को चूसने के लिए नीचे बैठा ही था कि मुझको एक छाया सी वहाँ आती दिखी और मैं चौंक कर उठ बैठा ।

हम दोनों दम साधे चुपचाप वहाँ बैठ गए ।

तब वो छाया चलते हुए हमारे और पास आई तो हम झाड़ियों के पीछे छुप गए और देखने लगे कि कौन है वो !

छाया इधर उधर देखने लगी ।

तब कम्मो फुसफुसा कर बोली- अरे, यह तो पारो ही है।
मैं बोला- चुप रहो, हम भी इसको ज़रा मज़ा चखाते हैं।

मैं और कम्मो चुपके से पारो के पीछे हो गए और जैसे ही वो मुड़ी, हम दोनों ने उसको धर दबोचा। कम्मो ने उसको पीछे से जकड़ लिया और मैंने उसके मुंह पर हाथ रख दिया और उसको खींचते हुए अँधेरे हिस्से की तरफ ले गए और फिर बगैर कुछ बोले मैंने उस की धोती उतार दी और फिर उसका पेटिकोट भी उतार कर परे फेंका।

अब वो हैरान हो गई थी और तब मेरा खड़ा लंड मैंने उसकी गांड पर रख कर एक धक्का मारा तो वो पूरा का पूरा अंदर चला गया।
उधर कम्मो ने उसके मुंह पर हाथ रख कर उसको कुछ कहने से रोक दिया और मैं अब पूरी तरह से पारो को चोदने में जुट गया, ज़ोर ज़ोर से मैं पारो की गांड में धकापेली करने लगा।

वो कुछ देख ना सके, इसलिए कम्मो ने उसके मुंह पर अपना पेटिकोट डाला था और वो मुझको आँख से इशारा करने लगी 'चोदो साली को !'
मैं और भी जोश और खरोश से उसकी चुदाई में लग गया और उसकी चूत में हाथ डाल कर उसका गीलापन अपने लौड़े पर लगा कर और तेज़ तेज़ धक्के मारने लगा।

मैं साथ ही साथ उसकी भग को भी मसल रहा था और वो बहुत जल्दी से एकदम गर्म हो गई और अपनी गांड को खुद ही आगे पीछे करने लगी।
अब मैं उसकी भग के साथ उसके मुम्मों को भी दबा रहा था और कम्मो भी उसकी चूत को मुंह से चूसने की कोशिश कर रही थी।
अब मैंने महसूस किया कि पारो की गांड अंदर से सिकुड़ने लगी है और उसका मुंह खुल रहा है और बंद हो रहा है तो मैंने धक्कों की स्पीड बहुत ही तेज़ कर दी और पारो विवश होकर जल्दी ही झड़ गई।

अब मैंने उसको सीधा किया और उसके चेहरे से कम्मो का पेटिकोट उतार दिया और तब उसने मुझको देखा और फिर कम्मो को देखा और हम दोनों तो हंसी के मारे लोट पोट हो गए थे।

तब मैंने कहा- हेलो पारो, गांड मराई का मज़ा आया क्या ?

पारो हैरान थी कि यह क्या हो रहा है फिर उसको समझ आ गई कि मैंने और कम्मो ने उसको मूर्ख बनाया है।

पारो भी हंसने लगी थी और बोली- वाह, तुम दोनों ने तो मेरा पासा ही पलट दिया। मैं तो आप दोनों को चुदाई करते पकड़ना चाहती थी लेकिन तुम दोनों मेरे से भी तेज़ निकले।

मैं बोला- तुम हमको पकड़ना चाहती थी ? कैसे ?

पारो बोली- मैंने तुम दोनों को गार्डन में जाते देख लिया था और मैं समझ गई थी कि तुम दोनों के मन में चोर है इसलिए मैं भी तुम दोनों के साथ शामिल होना चाहती थी, मैं भी तुम्हारे पीछे चल पड़ी और साथ में ये दो चादरें भी लेकर आई थी।

मैं और कम्मो हैरान रह गए क्योंकि हमने गार्डन में चुदाई का पहले कोई प्रोग्राम नहीं बनाया था लेकिन पारो की जबरन गांड मार कर मैं कुछ पछता रहा था, मैंने पारो से माफ़ी भी मांगी इस गलती के लिए लेकिन पारो बोली- रहने दो छोटे मालिक, मुझ को तो गांड मरवाई में बहुत ही मज़ा आया था और ऐसा आनन्द मैंने पहले कभी लिया ही नहीं।

अब कम्मो और मैं दोनों हंस पड़े तब पारो ने दोनों चादरें घास पर बिछा दी और खुद नंगी ही लेट गई और हम दोनों को भी इशारा किया कि 'आ जाओ, लेट जाओ... यहाँ ठंडी ठंडी हवा चल रही है।'

हम दोनों भी हंस पड़े और वहाँ बैठ गए और पारो को एक कस कर जफ़्फ़ी मार दी।

मैंने पारो से पूछा- हमको किसी और ने यहाँ आते तो नहीं देखा जैसे राम लाल का परिवार या फिर और कोई ?

पारो बोली- नहीं छोटे मालिक, यह जगह तो बिल्कुल अँधेरे में है और बाहर का गेट तो लॉक है। और राम लाल खुद तो पीकर सो गया होगा क्योंकि उसके बीबी बच्चे तो अपनी नानी के घर गए हैं।

पारो अब मेरे खड़े लंड से खेल रही थी और साथ में अपनी गांड में भी हाथ लगा रही थी क्योंकि उसकी गांड मारने में शायद उसकी सूखी गांड में थोड़ी बहुत चोट लग गई थी। मैं दोनों औरतों के बीच ही नंगा लेट गया और कम्मो की चूत में हाथ लगाया तो वो एकदम गीली थी। मैंने एक गर्म चुम्मी उसके लबों पर की और उसके मोटे और सॉलिड मुम्मों को चूसा और फिर मैं उसकी टांगों को चौड़ा करके उनके बीच बैठ गया और अपने लंड को कम्मो की चूत में डाल दिया।

लंड को अंदर डाल कर मैं यूँ ही लेटा रहा कम्मो के ऊपर और तब कम्मो ने खुद ही धक्के मारने शुरू कर दिए और मुझको नीचे आने का इशारा किया। मैं भी कम्मो के साथ ही उसके नीचे आ गया बगैर कनेक्शन तोड़े।

अब कम्मो मुझको ऊपर से पूरी ताकत के साथ चोदने लगी और पारो मेरे अंडकोष के साथ खेलने लगी, साथ ही उसकी ऊँगली कम्मो की गांड में गई हुई थी। थोड़ी देर में ही कम्मो हाय हाय... करती हुई झड़ गई और वो मेरे ऊपर से हट गई और उसकी जगह पारो मेरे ऊपर आ गई और अपने खास अंदाज़ से मुझको चोदने लगी।

वो अपने दोनों घुटनों को नीचे मेरी दोनों तरफ रख कर सिर्फ अपनी चूत को मेरे लंड से जोड़ कर चुदाई की शौकीन थी।

उसकी चुदाई भी बहुत धीरे धीरे से शुरू हुई और वो मुझ को बड़े प्रेम से चोदने लगी। उसके मोटे मुम्मे मेरे मुंह पर लटक रहे थे, मैं उनको चूसने में लग गया और उसकी चूचियों को मुंह में लेकर गोल गोल घुमाने से पारो को बड़ा मज़ा आ रहा था और वो काफी जोश से मुझको चोद रही थी लेकिन जल्दी ही वो भी झड़ गई और मेरे ऊपर से उतर कर मेरी दूसरी

तरफ लेट गई।

कम्मो भी मेरे लंड से खेलने लगी, मैंने थोड़ी देर बाद उससे पूछा- क्यों कम्मो डार्लिंग, अपनी गांड जबरदस्ती मरवानी है क्या ? या फिर अपने आप दे रही हो मुझको ?

कम्मो मेरे लंड को हाथ से ऊपर नीचे कर रही थी सो वो थोड़ी देर बाद बोली- छोटे मालिक, जबरदस्ती क्यों करवाएँ, हम तो खुद ही तैयार हैं गांड मरवाने के लिए ! लेकिन यहाँ तो क्रीम या वैसलीन तो है नहीं, कहीं मेरी गांड फट ना जाए ?

मैं बोला- पारो की गांड में से उसकी चूत में से निकल रहे रस को लगा कर मज़े से चोदा था। क्यों पारो ?

पारो बोली- वो तो ठीक है लेकिन फिर भी मेरी गांड कहीं छिल गई है, मुझको मज़ा तो बहुत आया लेकिन थोड़ा दर्द भी हो रहा है।

मैं बोला- ठीक है, कमरे में जाकर कम्मो की गांड मार लेते हैं क्यों कम्मो ?

कम्मो धीरे से बोली- जैसे आपकी मर्जी।

मैंने कहा- चलो फिर अंदर चलते हैं, बाहर का आनन्द तो ले ही लिया है।

मैं उठ कर नंगा ही जाने के लिए तैयार हो गया लेकिन कम्मो कहने लगी- क्या करते हो छोटे मालिक ? नंगे ही चल पड़े हो, कोई देख लेगा ! पहले कपड़े पहन लेते हैं।

मैं बोला- इस अँधेरी रात में कौन देखेगा और कोई देखता हुआ नज़र आया तो हम तीनों दो चादरों को अपने ऊपर करके ढक लेंगे ना !

कम्मो और पारो मुस्कराई और हम तीनों नंगे ही कमरे की तरफ चल पड़े।

मेरे दोनों हाथ कम्मो और पारो के नंगे चूतड़ों के ऊपर रखे हुए उनको मसल रहे थे और मैं मुड़ मुड़ कर कम्मो और पारो के उछलते हुए मम्मों को भी बार बार देख रहा था।

अँधेरी रात थी, हमको किसी ने नहीं देखा और हम आराम से अपने कमरे में आ गए।

मैं बोला- दिल में बहुत इच्छा थी कि कभी गार्डन में नंगा ही घूमूं, वो आज पूरी हो गई, दो खूबसूरत औरतों के साथ नंगे घूम कर !पारो के दिमाग की दाद देनी पड़ेगी जिसने चादरों के बारे में सोचा।

पारो और कम्मो अपनी कोठरी में जाने लगी लेकिन मैंने कहा- आज रात हम तीनों एक साथ सोयेंगे।

और फिर मैंने वो रात कम्मो और पारो की नज़र कर दी और पहले कम्मो की गांड मारी देसी घी लगा कर और फिर दोनों की बारी बारी से चूत की चुदाई की, दोनों को कम से कम 3-3 बार चोदा और फिर हम तीनों थक हार कर एक दूसरे की गले में बाँहों को डाल कर एक साथ ही सो गए।

कहानी जारी रहेगी।

ydkolaveri@gmail.com

